Toppersnotes

Unleash the topper in you

बिहार (STET)

हिन्दी

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (BSEB)

भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	**हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन और नामकरण**	
	➢ इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ	1
	➢ काल-विभाजन	6
	➢ अन्य प्रसिद्ध इतिहासकार	9
2.	**अदिकाल, भक्ति काल, रीतिकाल की प्रमुख प्रकृतियाँ एवं रचनाकार**	
	➢ आदिकाल:- (1000 ई. से 1350 ई. तक)	13
	➢ आदिकालीन अपभ्रंश साहित्य	32
	➢ भक्तिकाल [1350 ई. से 1650 ई. तक]	34
	➢ प्रेममार्गी काव्यधारा के प्रमुख कवि	48
	➢ सूरोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (Sūrochchhiṣṭam Jagatsarvam)	54
	➢ रामाश्रयी काव्य धारा	60
	➢ भारतीय भक्ति पद्धति से सम्बंधित प्रमुख वाद/सम्प्रदाय/दर्शन/शाखा का नाम	75
	➢ रीतिकाल (1650 ई. से 1850 ई. तक)	78
3.	**आधुनिक काल-भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता**	
	➢ आधुनिक काल (1850 ई. से अब तक)	92
	➢ भारतेन्दु युग [1850 ई. से 1900 ई. तक]	93
	➢ द्विवेदी युग (1900 ई. – 1920 ई.)	99
	➢ छायावाद काल (1918 ई. से 1986/1988 ई. तक)	107
	➢ प्रगतिवाद-काल - (1936 ई. से 1943 ई. तक)	122
	➢ प्रयोगवाद काल (1943 ई. - 1953 ई. तक)	127
	➢ नयी कविता (नवलेखन काल) (1953 ई. से अब तक)	133

1 CHAPTER हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन और नामकरण

इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ

- इतिहास शब्द इति + ह + अस् (आस) के योग से बना है। यहाँ इति का अर्थ होता है समाप्त, ह का अर्थ होता है होना, अर्थात जिसकी निश्चित समाप्ति हो चुकी हो, उसे ही इतिहास कहा जाता है।
- शब्दकोश के अनुसार इतिहास का शाब्दिक अर्थ होता है - ऐसा ही था या ऐसा ही हुआ।
- इतिहास में सामान्यतः भूतकाल में घटित हुई वास्तविक या यथार्थ घटनाओं का समावेश किया जाता है।

इतिहास की परिभाषा

- **महाभारत के रचयिता वेदव्यास के अनुसार:**

  "धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्।

  पूर्ववृत्तकथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते॥"
- अर्थात, ऐसी रचना जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इत्यादि पुरुषार्थों के उपदेशों का समन्वय किया जाता है एवं पूर्व में घटित हो चुकी घटनाओं और कथाओं को जोड़ दिया जाता है, तो उसे इतिहास कहते हैं।
- **प्रो० कार्लाइल के अनुसार:** "इतिहास एक ऐसा दर्शन है, जो दृष्टान्तों (उदाहरणों) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है।"

साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ

- साहित्य शब्द स + हित + य के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है एकत्र होना, अर्थात गद्य एवं पद्य का वह सम्मिलित रूप, जो हमें शिक्षा और ज्ञान प्रदान करता है, साहित्य कहलाता है।

साहित्य की परिभाषा

- मनुष्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का विश्लेषण करना ही साहित्य कहलाता है।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार:-** "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्तियों में परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।"
- डॉ. **नगेन्द्र के अनुसार:-** "साहित्य का इतिहास बदलती हुई अभिरुचियों एवं संवेदनाओं का इतिहास होता है, जिसका सीधा संबंध आर्थिक एवं चिंतनात्मक परिवर्तन से माना जाता है।"

इतिहास लेखन की पद्धतियाँ

- किसी भी साहित्य का इतिहास लिखने के लिए मुख्यतः चार प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है, यथा -

1. **वर्णानुक्रम पद्धति**
   - ✓ इस पद्धति के अंतर्गत कवियों या लेखकों को वर्णमाला के क्रमानुसार स्थान दिया जाता है।
   - ✓ हिन्दी साहित्य में गार्सा द तासी एवं ठाकुर शिवसिंह सेंगर के द्वारा इसी पद्धति का प्रयोग किया गया है।
2. **कालानुक्रम पद्धति**
   - ✓ इस पद्धति के अंतर्गत कवियों या लेखकों को उनके कालक्रमानुसार स्थान दिया जाता है।
   - ✓ हिन्दी साहित्य में जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं मिश्र बंधु के द्वारा इसी पद्धति को अपनाया गया है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

3. **वैज्ञानिक पद्धति**

✓ इस पद्धति के अंतर्गत लेखक पूर्णतः तटस्थ एवं निष्पक्ष होकर तथ्यों या आँकड़ों को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करता है।

✓ हिन्दी साहित्य में डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ. बच्चन सिंह जैसे विद्वानों द्वारा इसी पद्धति को अपनाया गया है।

4. **विधेयवादी पद्धति** ⇒

✓ इस पद्धति के अंतर्गत कालक्रमानुसार विवेचन के साथ-साथ भावगत एवं रसगत विशेषताओं पर भी ध्यान दिया जाता है। अर्थात यदि किसी कवि/लेखक का जन्म तो किसी अन्य काल में हुआ हो, परंतु रचनाओं की विशेषताएँ किसी अन्य काल की मिल रही हों, तो उस कवि को रचना के आधार पर स्थान देना ही विधेयवादी पद्धति कहलाती है।

✓ साहित्य-इतिहास लेखन की यह सर्वश्रेष्ठ पद्धति मानी जाती है। विश्व स्तर पर फ्रेंच विद्वान 'तेन' इस पद्धति के प्रतिपादक माने जाते हैं।

✓ हिन्दी साहित्य में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के द्वारा इसी पद्धति का प्रयोग किया गया है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन की प्रक्रिया

➢ हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन की वास्तविक शुरुआत तो **1839 ई.** से हुई मानी जाती है। परंतु इससे पहले भी कुछ रचनाएँ ऐसी प्राप्त होती हैं, जिनमें इतिहास के कुछ तत्व पढ़ने को मिल जाते हैं। यथा -

➢ **प्रारंभिक ऐतिहासिक रचनाएँ**

क्र. सं.	**रचना का नाम**	**रचनाकार का नाम**
1.	84 वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ/ वल्लभाचार्य
2.	252 चौपाई श्रीकृष्णचन्द्र की वार्ता	विट्ठलनाथ
3.	भक्तमाल	नाभादास
4.	वल्लभ दिग्विजय	यदुनाथ
5.	कवि माला	हरिराम (तलससी)
6.	रागकल्पद्रुम/रागसागराद्भव	कृष्णदत्त व्यास देव
7.	चन्द्रापदेश	नकछंदी तिवारी
8.	विद्वान माद तरंगिणी	जुगल सिंह
9.	सुन्दरी तिलक	हरिशरण
10.	कार्तदास	कालिदास त्रिपाठी
11.	मूल गुसाईं चरित	बाबा बना माधव दास

हिन्दी इतिहास लेखन की वास्तविक शुरुआत

➢ हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने में निम्नलिखित पाँच विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान माना गया है:

1. **हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का सर्वप्रथम प्रयास करने वाले इतिहासकार** - गार्सा द तासी (फ्रेंच भाषा, **1839 ई.**)
2. **हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का प्रयास करने वाले भारतीय इतिहासकार** - ठाकुर शिवसिंह सेंगर (हिन्दी भाषा, **1883 ई.**)
3. **सच्चे अर्थों में हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले सर्वप्रथम इतिहासकार** - जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (अंग्रेज़ी भाषा, **1888 ई.**)
4. **काल विभाजन की परंपरा के अनुसार हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले सर्वप्रथम परंपरागत इतिहासकार** - मिश्र बंधु (हिन्दी भाषा, **1913 ई.**)
5. **सच्चे अर्थों में सर्वप्रथम परंपरागत इतिहासकार** - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (हिन्दी भाषा, **1929 ई.**)

1. गार्सा द तासी (19वीं शताब्दी)

- ✓ हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का सर्वप्रथम प्रयास एक **फ्रेंच विद्वान "गार्सा द तासी"** ने किया था।
- ✓ उनकी प्रसिद्ध रचना: (इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐन्दूई-ऐ ऐन्दुस्तानी)
- ✓ **इस रचना के प्रमुख अंश**
  - **इस्त्वार** – इतिहास
  - **लितरेत्यूर** – साहित्य
  - **ऐन्दूई** – हिन्दुओं के द्वारा बोली जाने वाली भाषा
  - **ऐन्दुस्तानी** – मुसलमानों के द्वारा बोली जाने वाली उर्दू मिश्रित भाषा
- ✓ **प्रकाशक:- द ऑरियंटल ट्रांसलेशन कमेटी ऑफ आयरलैंड**
- ✓ **प्रकाशन वर्ष और संस्करण**
  - यह रचना दो संस्करणों और पाँच भागों में प्रकाशित हुई थी। यथा –
- ✓ **प्रथम संस्करण (2 भागों में)**
  - **प्रथम भाग:** 1839 ई.
  - **द्वितीय भाग:** 1847 ई.
- ✓ **द्वितीय संस्करण (3 भागों में)**
  - **प्रथम व द्वितीय भाग:** 1870 ई.
  - **तृतीय भाग:** 1871 ई.
- ✓ **प्रमुख विशेषताएँ -** यह रचना मूलतः फ्रेंच भाषा में लिखी गई थी
  1. **1848 ई.** में **दिल्ली के मौलवी करीमुद्दीन** ने अपने गुरु **वाई. एफ. फैलन** के सहयोग से "तज़किरा-ए-शुअरा-ए-हिन्दी" नामक **उर्दू अनुवाद** प्रस्तुत किया।
  2. **1953 ई.** में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर **लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय** ने इसे "हिन्दवी साहित्य का इतिहास" नाम से **हिन्दी में अनुवादित** किया।
  3. इन तीनों भाषाओं (फ्रेंच, उर्दू, हिन्दी) में सम्मिलित कवियों की संख्या निम्नानुसार है:

क्र. सं.	भाषा / संस्करण	कुल कवि	हिन्दी के कवि
1.	**फ्रेंच संस्करण**	738	72
2.	**उर्दू संस्करण**	1004	60
3.	**हिन्दी संस्करण**	358	220

➢ **महत्त्व**

- ✓ एक विदेशी विद्वान होने के बावजूद **गार्सा द तासी** ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का प्रयास किया, जिससे अन्य भारतीय विद्वानों को भी प्रेरणा प्राप्त हुई।

➢ **कमियाँ**

- ✓ इस रचना में **काल विभाजन** का कोई प्रयास नहीं किया गया है।
- ✓ **नलिन विलोचन शर्मा** ने "हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन" में **गार्सा द तासी को हिन्दी का प्रथम कवि माना।**
- ✓ इसमें कवियों और लेखकों को **कालक्रम के स्थान पर वर्णमाला क्रम** में रखा गया है।
  - **सर्वप्रथम कवि:** अंगद
  - **सबसे अंतिम कवि:** हेमंत

➢ **सारांश**

✓ उपर्युक्त दो कमियों के कारण इस रचना को वर्तमान में इतिहास पुस्तक के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है।

✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने इस रचना को "वृत्त संग्रह" मात्र कहकर पुकारा है।

2. ठा. शिवसिंह सेंगर

✓ हिन्दी भाषा में हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले सर्वप्रथम इतिहासकार **ठाकुर शिवसिंह सेंगर** माने जाते हैं।

✓ **रचना:** शिवसिंह सरोज – इसे हिन्दी साहित्य इतिहास का प्रस्थान बिंदु भी कहा जाता है।

✓ **प्रकाशन वर्ष:** 1883 ई.

✓ **प्रकाशक:** नवल किशोर प्रेस, लखनऊ

✓ **प्रमुख विशेषताएँ**

- इस पुस्तक में कुल **1000 कवियों/लेखकों** को शामिल किया गया है।
- इस पुस्तक में कवियों के **जन्मकाल, रचनाकाल एवं मृत्यु काल** का उल्लेख भी किया गया है, परंतु वे तिथियाँ वर्तमान में मान्य नहीं मानी जाती हैं।

✓ **महत्त्व**

- इस रचना में तत्कालीन समय तक उपलब्ध हिन्दी से संबंधित समस्त जानकारियों को एक जगह संकलित करने का **सराहनीय प्रयास** किया गया है, जिससे इनके परवर्ती इतिहासकारों को सामग्री खोजने में सहायता प्राप्त हुई।

✓ **कमियाँ**

1. इस पुस्तक में भी **काल विभाजन** का कोई प्रयास नहीं किया गया है।
2. इस पुस्तक में भी **कवियों को कालक्रमानुसार स्थान न देकर, हिन्दी वर्णमाला के "अकारादि क्रम"** में रखा गया है।
3. इस पुस्तक में **उल्लेखित तिथियाँ बिना किसी तथ्य के केवल अनुमान के आधार पर लिखी गई प्रतीत होती हैं।**

✓ **सारांश**

- उपर्युक्त कमियों के कारण इस पुस्तक को भी वर्तमान में **इतिहास पुस्तक** के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने इस रचना को "वृत्त संग्रह" मात्र कहकर पुकारा है।

✓ **विशेष तथ्य**

- इन्होंने हिन्दी साहित्य का आरम्भ **विक्रम संवत 770** से माना है, जिसके कारण ये **कवि "पुष्य" या "पुण्ड" को हिन्दी का पहला कवि मानने की भूल कर बैठे हैं।**

3. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन

✓ **डॉ. किशोरी लाल गुप्त** के अनुसार, सच्चे अर्थों में हिन्दी साहित्य के सर्वप्रथम इतिहासकार **जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन** माने जाते हैं।

✓ **रचना:** The Modern Vernacular Literature of Northern Hindustan

✓ **प्रकाशन वर्ष:** 1888 ई.

✓ **प्रकाशक:** द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल

✓ **विशेष जानकारी:**

- **1888 ई.** में यह इतिहास **द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल** द्वारा प्रकाशित **पत्रिका के विशेषांक** के रूप में प्रकाशित हुआ था।
- **एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन 1889 ई. में हुआ था।**

- ✓ **प्रमुख विशेषताएँ**
  - यह पुस्तक मूलतः **अंग्रेजी भाषा** में लिखी गई थी।
  - **नवम्बर 1957 ई.** में **डॉ. किशोरी लाल गुप्त** ने इसे "हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास" नाम से **हिन्दी में अनुवादित** किया।
  - इस रचना में कुल **952 कवियों/लेखकों** का वर्णन किया गया है।
  - इस रचना में केवल **हिन्दी के कवियों** को ही शामिल किया गया है, अर्थात् **संस्कृत, पाली, प्राकृत** आदि भाषाओं के कवियों को इसमें स्थान नहीं दिया गया है।
  - इस रचना में हिन्दीसाहित्य के सम्पूर्ण विकास क्रम को निम्नलिखित **चार श्रेणियों** में विभाजित किया गया है:
    1. **चारण काव्य**
    2. **धर्माश्रित काव्य**
    3. **प्रेमाश्रित काव्य या प्रेम काव्य**
    4. **राज्याश्रित काव्य या दरबारी काव्य**
- ✓ **काल विभाजन- सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को 12 कालखण्डों में विभाजित किया गया है:**
  1. चारण काल
  2. पंद्रहवीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जागरण
  3. जायसी की प्रेम कविता
  4. ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय
  5. मुगल दरबार
  6. तुलसीदास
  7. रीतिकाव्य
  8. तुलसीदास के अन्य परवर्ती कवि
  9. अठारहवीं शताब्दी
  10. कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान
  11. महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान
  12. विविध
- ✓ **नोट:**
  - ये **बारह कालखण्ड मूलतः इस रचना के 12 अध्याय मात्र हैं।**
  - **अत्यधिक लम्बा काल विभाजन होने के कारण इसे वर्तमान में स्वीकार नहीं किया जाता है।**
- ✓ **जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन के तीन महत्वपूर्ण कार्य:**
  1. **"The Modern Vernacular Literature of Northern Hindustan"** पुस्तक की रचना।
  2. **भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण** (A Linguistic Survey of India) – 1902 से 1909 ई. तक।
  3. **तुलसीदास का वैज्ञानिक अध्ययन** – 1886 से 1921 ई. तक।
- ✓ **नोट:-** इन्होंने गोस्वामी तुलसीदास पर **कुल 12 शोध पत्र (निबंध)** लिखे थे, जिनका सर्वप्रथम वाचन **प्राच्य विशारद सभा, वियना** में किया गया था।
- ✓ **विशेष तथ्य**
  1. **भक्तिकाल को "हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल" मानने वाले सर्वप्रथम विद्वान जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ही माने जाते हैं।**
  2. **इन्होंने हिन्दी भाषा को अंग्रेजों द्वारा आविष्कृत भाषा भी कहा है।**
  3. **कुल कवि - 952**
- ✓ **सारांश:- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** इस रचना को भी **इतिहास पुस्तक के रूप में मान्यता नहीं देते हैं।** उन्होंने इस रचना को **"बड़ा वृत्त संग्रह"** मात्र कहकर पुकारा है।

4. मिश्रबन्धु

- ✓ हिन्दी साहित्य में **कालखण्ड सहित काल विभाजन की परंपरा स्थापित करने वाले** सर्वप्रथम इतिहासकार **मिश्रबन्धु** माने जाते हैं।

- ✓ **मिश्रबन्धु कौन थे?**

  इटौंजा, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) के मिश्र ब्राह्मण गोत्र में जन्मे तीन भाइयों ने मिलकर यह लेखन कार्य किया था। इन्हीं तीनों को मिश्रबन्धु कहा जाता है:

  1. **पं. गणेश बिहारी मिश्र**
  2. **रावराजा श्याम बिहारी मिश्र**
  3. **रायबहादुर शुकदेव बिहारी मिश्र**

- ✓ **रचना**
- ✓ **कृति:** मिश्रबन्धु विनोद (चार भागों में)
- ✓ **प्रकाशन वर्ष:**
  - **प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाग** – 1913 ई.
  - **चतुर्थ भाग** – 1934 ई.
- ✓ **प्रमुख विशेषताएँ –**
  - इस रचना में लगभग **5000 (वास्तविक संख्या: 4591) कवियों/लेखकों** का विवेचन किया गया है।
  - इस पुस्तक में **अज्ञात कवियों** को भी स्थान दिया गया है।
  - इस पुस्तक में कवियों के विवेचन के साथ-साथ **साहित्य के विविध अंगों** पर भी प्रकाश डाला गया है।
  - हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम **"इतिवृत्तात्मक इतिहास"** इसी पुस्तक में पढ़ने को मिलता है।
  - इस पुस्तक में लिखित अधिकांश सामग्री **नागरी प्रचारिणी सभा, काशी** द्वारा करवाए गए **"हिन्दी ग्रंथों के खोजकार्य"** से ली गई प्रतीत होती है। (खोजकार्य अवधि: 1900 ई. से 1921 ई. तक)

काल-विभाजन

- ➢ हिन्दी साहित्य इतिहास में **काल विभाजन की परंपरा** सर्वप्रथम मिश्रबन्धु विनोद में प्राप्त होती है। इसमें सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को निम्नलिखित **8 कालखण्डों** में विभाजित किया गया है:

1. **आरम्भिक काल - 700 वि.स. से 1444 वि.स. तक**
   - ✓ **पूर्व आरम्भिक काल - 700 वि.स. से 1343 वि.स. तक**
   - ✓ **उत्तर आरम्भिक काल - 1344 वि.स. से 1444 वि.स. तक**
2. **माध्यमिक काल - 1445 वि.स. से 1680 वि.स. तक**
   - ✓ **पूर्व माध्यमिक काल - 1445 वि.स. से 1560 वि.स. तक**
   - ✓ **प्रौढ़ माध्यमिक काल - 1561 वि.स. से 1680 वि.स. तक**
3. **अलंकरण काल - 1681 वि.स. से 1889 वि.स. तक**
   - ✓ **पूर्व अलंकरण काल - 1681 वि.स. से 1790 वि.स. तक**
   - ✓ **उत्तर अलंकरण काल - 1791 वि.स. से 1889 वि.स. तक**
4. **परिवर्तन काल ⇒ 1890 वि.स. से 1925 वि.स. तक**
5. **वर्तमान काल - 1926 वि.स. से अब तक**

- ➢ **नोट:-** निम्नलिखित **दो प्रमुख कारणों** से इस काल विभाजन को वर्तमान में स्वीकार नहीं किया जाता है:
  1. **इन्होंने हिन्दी की शुरुआत विक्रम संवत 700 से मानी है,** जबकि वास्तविकता में यह समय अपभ्रंश भाषा का काल माना जाता है।
  2. **कालखण्डों के नामकरण में एक समान पद्धति नहीं अपनाई गई है।**

- **विशेष तथ्य**
  - ✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** इस रचना को भी इतिहास पुस्तक के रूप में मान्यता नहीं देते हैं।
  - ✓ उन्होंने इस रचना को **"बड़ा भारी/प्रकाण्ड कविवृत्त संग्रह"** एवं "मिश्र बन्धुओं को परिश्रमी संकलनकर्ता" कहकर पुकारा है।
- **मिश्रबन्धु की अन्य महत्वपूर्ण कृति- "हिन्दी नवरत्न"** नामक एक अन्य पुस्तक भी लिखी गई थी, जिसमें हिन्दी के निम्नलिखित **9 प्रमुख कवियों** का विवेचन किया गया है:

1. **तुलसीदास**
2. **सूरदास**
3. **केशवदास**
4. **कबीरदास**
5. **देव**
6. **बिहारी**
7. **त्रिपाठी बन्धु (मतिराम और भूषण)**
8. **चन्दबरदाई**
9. **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941 ई.)

- ✓ सच्चे अर्थों में **पूर्ण वैज्ञानिकता के साथ काल विभाजन की परंपरा स्थापित करने वाले** सर्वप्रथम इतिहासकार **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** माने जाते हैं।
- ✓ **रचना**
  - **कृति:** हिन्दी साहित्य का इतिहास
  - **प्रकाशन वर्ष:** 1929 ई.
  - **प्रकाशक:** नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- ✓ **नोट:**
  1. **जनवरी 1930 ई.** में यह रचना **नागरी प्रचारिणी सभा, काशी** द्वारा प्रकाशित "हिन्दी शब्द सागर" ग्रंथ की भूमिका के रूप में प्रकाशित हुई थी। **इसी वर्ष के अंत में इसे एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया गया था।**
  2. इस पुस्तक का **संशोधित एवं परिवर्धित दूसरा संस्करण 1940 ई.** में प्रकाशित हुआ था।
  3. **"हिन्दी शब्द सागर" ग्रंथ के प्रमुख योगदानकर्ता:**
     - (i) **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**
     - (ii) **बाबू श्यामसुंदर दास**
     - (iii) **रामचंद्र वर्मा**
- ✓ **प्रमुख विशेषताएँ**
  - इस रचना में **लगभग 1000 कवियों** का विवेचन किया गया है।
  - इस रचना में **विशेष लेखन कार्य करने वाले कवियों** को ही स्थान दिया गया है।
  - कवियों के विवेचन में **समालोचनात्मक दृष्टिकोण** अपनाया गया है।
  - इस रचना के लेखन में इनके मित्र **केदारनाथ पाठक** का भी अत्यधिक सहयोग रहा।
- ✓ **अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ:**
  - **रस मीमांसा** - सैद्धान्तिक समीक्षा
  - **सिद्धांत** - नगेन्द्र
  - **रसज्ञ रंजन** - महावीर प्रसाद द्विवेदी

✓ **काल विभाजन:-** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को **चार प्रमुख कालखण्डों** में विभाजित किया है:

1. **वीरगाथा काल (आदिकाल)** - वि.स. **1050 से 1375** तक
2. **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)** - वि.स. **1375 से 1700** तक
3. **उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)** - वि.स. **1700 से 1900** तक
4. **गद्य काल (आधुनिक काल)** - वि.स. **1900 से 1984** तक

✓ उप **विभाजन- वीरगाथा काल को दो भागों में विभाजित किया गया है:**

1. **अपभ्रंश भाषा काल या प्राकृताभास हिन्दी काल** - वि.स. **1050 से 1200** तक
2. **वीरगाथा काल** - वि.स. **1200 से 1375** तक

✓ **आधार ग्रंथ:-**

(i) हिन्दी साहित्य के प्रथम चरण को **वीरगाथा काल** नाम देने के लिए इन्होने निम्नलिखित **12 ग्रंथों** को आधार बनाया:

क्र. सं.	**रचना का नाम**	**रचनाकार**
1.	पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई
2.	बीसलदेव रासो	नरपति नाल
3.	परमाल रासो	जगनिक
4.	हम्मीर रासो	शारंगधर
5.	खुमाण रासो	दलपति विजय
6.	विजयपाल रासो	नल्लसिंह भाट
7.	कीर्तिलता	विद्यापति
8.	कीर्तिपताका	विद्यापति
9.	पदावली	भट्ट केदार
10.	जयचंद प्रकाश	मधुकर कवि
11.	जयमयंक जस-चंद्रिका	अमीर ख़ुसरो
12.	ख़ुसरो की पहेलियाँ	भट्ट केदार

(ii) **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) को चार उप भागों में विभाजित किया गया है:**

- **सगुण भक्ति धारा**
- **निर्गुण भक्ति धारा**
- **राम भक्ति शाखा**
- **कृष्ण भक्ति शाखा**

(iii) **आधुनिक काल को तीन उपभागों में विभाजित किया गया है:**

1. **प्रथम उत्थान काल** - (भारतेंदु युग)
2. **द्वितीय उत्थान काल** - (द्विवेदी युग)
3. **तृतीय उत्थान काल** - (छायावादी युग)

✓ **अन्य रचनाएँ**

1. **रस मीमांसा** - सैद्धान्तिक समीक्षा
2. **सूरदास व्यावहारिक समीक्षा**
3. **गोस्वामी तुलसीदास**

Unleash the topper in you

4. **चिन्तामणि (चार खंडों में निबंध संग्रह)**
5. **विश्व प्रपंच (दर्शनशास्त्र से संबंधित रचना)**
6. **मधु स्रोत (काव्य संग्रह)**

- ✓ **संपादन कार्य**
  - **जायसी ग्रंथावली**
  - **नागरी प्रचारिणी पत्रिका (त्रैमासिक पत्रिका)**

अन्य प्रसिद्ध इतिहासकार

1. डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

- ✓ **रचना:** हिन्दी साहित्य का इतिहास
- ✓ **प्रकाशन वर्ष:** 1931 ई.
- ✓ **काल विभाजन-** डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' ने सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को **तीन कालखण्डों** में विभाजित किया है। प्रत्येक के **दो-दो उपभाग एवं दो-दो नाम** रखे गए हैं:
  1. **आदिकाल (हिन्दी साहित्य की बाल्यावस्था)**
     - पूर्वार्द्ध आदिकाल - वि.स. 1000 से वि.स. 1200 तक
     - उत्तरार्द्ध आदिकाल - वि.स. 1200 से वि.स. 1400 तक
  2. **मध्यकाल (हिन्दी साहित्य की किशोरावस्था)**
     - पूर्वार्द्ध मध्यकाल - वि.स. 1400 से वि.स. 1600 तक
     - उत्तरार्द्ध मध्यकाल - वि.स. 1600 से वि.स. 1800 तक
  3. **आधुनिक काल (हिन्दी साहित्य की युवावस्था)**
     - परिवर्तन काल - वि.स. 1800 से वि.स. 1900 तक
     - वर्तमान काल - वि.स. 1900 से अब तक
- ✓ **विशेष तथ्य:-** इन्होंने **आदिकाल को "जय काव्य काल"** एवं **रीतिकाल को "फलकाल"** के नाम से भी पुकारा है।
- ✓ इनकी निम्नलिखित दो अन्य रचनाएँ भी उल्लेखनीय हैं:
  1. **साहित्य प्रकाश** – 1931 ई.
  2. **साहित्य परिचय** – 1931 ई.

2. डॉ. रामकुमार वर्मा

- ✓ **रचना:** हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
- ✓ **काल सीमा: वि.स. 693 से 1693 तक**
- ✓ **प्रकाशन वर्ष:** 1938 ई. (प्रथम भाग)
- ✓ **भाग:** 2
- ✓ **काल विभाजन -** इन्होंने **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** का अनुसरण करते हुए सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को **चार प्रधान काल खण्डों** में विभाजित किया, परंतु शुक्ल के **"वीरगाथा काल"** को **"संधि-चारण काल"** नाम देकर दो खण्डों में उपविभाजित किया।

1. **संधिकाल एवं चारण काल**

   (i) **संधिकाल** - वि.स. **750 से 1000** तक

   (ii) **चारण काल** - वि.स. **1000 से 1375** तक

2. **भक्तिकाल** - वि.स. **1375 से 1700** तक
3. **रीतिकाल** - वि.स. **1700 से 1900** तक
4. **आधुनिक काल** - वि.स. **1900 से अब तक**

✓ **विशेष तथ्य:-**

- इस रचना में **केवल आदिकाल एवं भक्तिकाल** का ही वर्णन प्राप्त होता है, अतः यह एक **अधूरी रचना** मानी जाती है।
- इन्होंने आचार्य शुक्ल द्वारा प्रतिपादित **"ज्ञानाश्रयी काव्यधारा"** को **"संत काव्य"** एवं **"प्रेमाश्रयी काव्यधारा"** को **"सूफी काव्य"** नाम दिया।
- इन्होंने **हिन्दी साहित्य की शुरुआत वि.स. 750 से मानी**, जिसके कारण ये **अपभ्रंश कवि "स्वयंभू"** को "हिन्दी का पहला कवि" मानने की भूल कर बैठे।
- हिन्दी साहित्य में इनका स्थान **"छायावाद की लघुत्रयी"** में भी है।

✓ **छायावाद की लघुत्रयी:**

1. **महादेवी वर्मा**
2. **रामकुमार वर्मा**
3. **भगवतीचरण वर्मा**

✓ हिन्दी साहित्य में इन्हें **"एकांकी लेखन"** के कारण विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979 ई.)

✓ **रचनाएँ**

1. **हिन्दी साहित्य की भूमिका** – 1940 ई. (व्याख्यान ग्रंथ)
2. **हिन्दी साहित्य: उद्भव एवं विकास** – 1952 ई.
3. **हिन्दी साहित्य का आदिकाल** – 1953 ई.

✓ **काल विभाजन -** इन्होंने सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को **चार कालखण्डों** में विभाजित किया:

1. **आदिकाल** - 1000 ई. से 1400 ई. तक
2. **भक्तिकाल** - 1400 ई. से 1600 ई. तक
3. **रीतिकाल** - 1600 ई. से 1800 ई. तक
4. **आधुनिक काल** - 1800 ई. से अब तक

✓ **विशेष तथ्य :- ये आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के सबसे बड़े आलोचक माने जाते हैं।**

- इन्होंने आचार्य शुक्ल की अनेक अवधारणाओं को **सटीक तथ्यों के आधार पर खंडित** किया है।
- इन्होंने **आचार्य शुक्ल द्वारा प्रतिपादित वीरगाथा काल को "आदिकाल"** नाम प्रदान किया था।
- इन्होंने **आदिकाल को "अत्यधिक विरोधों एवं व्याधाताओं (आपदाओं) का युग"** कहकर पुकारा है।
- **"अब्दुल रहमान"** को हिन्दी का सबसे पहला कवि मानते हैं।

- ✓ **सम्मान और पुरस्कार:**
  - इनके द्वारा रचित "आलोक पर्व" निबंध संग्रह के लिए **1973 ई. में "साहित्य अकादमी पुरस्कार"** मिला।
  - भारत सरकार ने इन्हें **"पद्मभूषण"** से सम्मानित किया।
  - **"बंग साहित्य अकादमी, कोलकाता"** द्वारा **1962 ई. में "टैगोर सम्मान"** प्रदान किया गया।
- ✓ **विशेष कथन**
  - "भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करे।"
  - यह कथन **द्विवेदी जी ने तुलसीदास जी की प्रशंसा में लिखा** था।

4. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त

- ✓ **रचनाएँ-** हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (दो खण्ड)- 1965 ई. काल-विभाजन - इनके द्वारा भी सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को
- ✓ **काल विभाजन -** डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त ने **सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को चार कालखण्डों** में विभाजित किया:
  1. **प्रारम्भिक काल** - 1184 ई. से 1350 ई. तक
  2. **पूर्व मध्यकाल** - 1350 ई. से 1600 ई. तक
  3. **उत्तर मध्यकाल** - 1600 ई. से 1857 ई. तक
  4. **आधुनिक काल** - 1857 ई. से अब तक
- ✓ **विशेष तथ्य**
  - **इन्होंने जैन कवि "शालिभद्र सूरि"** को "हिन्दी का पहला कवि" माना, **जिसके कारण ही इन्होंने हिन्दी साहित्य की शुरुआत 1184 ई. से मानी।**
  - **हिन्दी काव्य में श्रृंगार परंपरा एवं महाकवि बिहारी** विषय पर शोध कार्य करने के कारण **1959 ई. में इन्हें "पी.एच.डी." (डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी) की उपाधि** प्राप्त हुई।
  - 'साहित्य विज्ञान : साहित्य का वैज्ञानिक विवेचन' विषय पर शोध कार्य के लिए **1965 ई. में इन्हें "डी.लिट." (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि** प्राप्त हुई।
  - **हिन्दी साहित्य में "सर्वप्रथम पी.एच.डी." की उपाधि "पीताम्बर बड़थवाल" को मिली थी।**

5. डॉ. नगेन्द्र

- ✓ **रचनाएँ**
  - हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास – 1973 ई.
  - हिन्दी साहित्य का इतिहास (यह 'वृहद इतिहास' का ही संक्षिप्त रूप है)
  - रीतिकाव्य की भूमिका एवं महाकवि देव
- ✓ **काल विभाजन-** इन्होंने सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को **चार काल खण्डों** में विभाजित किया और **आधुनिक काल को चार उपभागों** में विभाजित किया:
  - **आदिकाल** - 7वीं शताब्दी के मध्य से 14वीं शताब्दी के मध्य तक (650 ई. से 1350 ई. तक)
  - **भक्तिकाल** - 14वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के मध्य तक (1350 ई. से 1650 ई.)
  - **रीतिकाल** - 17वीं शताब्दी के मध्य से 19वीं शताब्दी के मध्य तक (1650 ई. से 1850 ई. तक)
  - **आधुनिक काल** - 19वीं शताब्दी के मध्य से अब तक (1857 से अब तक)

✓ **आधुनिक काल उपविभाजन**

(i) **पुनर्जागरण काल (भारतेंदु युग)** - 1857 ई. से 1900 ई. तक

(ii) **जागरण सुधार काल (द्विवेदी युग)** - 1900 ई. से 1918 ई. तक

(iii) **छायावाद काल** - 1918 ई. से 1938 ई. तक

(iv) **छायावादोत्तर काल** (दो भाग)

(क) **प्रगति-प्रयोग काल** - 1938 ई. से 1953 ई. तक

(ख) **नवलेखन काल** - 1953 ई. से अब तक

✓ **विशेष तथ्य -**

- "रीतिकाव्य की भूमिका एवं महाकवि देव" पर शोध करने के लिए **1948 ई. में पी.एच.डी.** की उपाधि प्राप्त हुई।
- **"हिन्दी साहित्य का वास्तविक एवं आदर्श काल विभाजन"** प्रस्तुत किया।

✓ **नोट**

- हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास - **बाबू गुलाबराय**
- हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - **नंददुलारे वाजपेयी**
- हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास - **बच्चन सिंह**

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER

अदिकाल, भक्ति काल, रीतिकाल की प्रमुख प्रकृतियाँ एवं रचनाकार

आदिकाल:- (1000 ई. से 1350 ई. तक)

- हिन्दी साहित्य का प्रथम चरण ही आदिकाल के नाम से पुकारा जाता है।
- भारतीय इतिहास की दृष्टि से जिस समय भारत में सम्राट हर्षवर्धन के साम्राज्य का पतन हो रहा था, उसी समय हिन्दी साहित्य का उद्भव हुआ था।
- अपने प्रारम्भिक काल में अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषा का सम्मिलित प्रयोग किया जाता था। इस अपभ्रंश मिश्रित हिन्दी को अलग-अलग विद्वानों के द्वारा अलग-अलग नामों से पुकारा गया है, यथा –

क्र. सं.	विद्वान का नाम	नामकरण
1.	डॉ. भोलाशंकर व्यास	अवहट्ठ
2.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	प्राकृताभास हिंदी
3.	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	पुरानी हिंदी
4.	विद्यापति	देसिल बनिआ
5.	डॉ. नागेन्द्र	विकसित अपभ्रंश

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी के आदिकाल को **"अत्यधिक विरोधों एवं व्याघातों का युग"** कहकर पुकारा है।
- डॉ. नागेन्द्र ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल को **"आक्रमण एवं युद्धों के प्रभाव की मनःस्थिति का प्रतिफल"** कहकर पुकारा है।

ToppersNotes
Unleash the topper in you

आदिकाल का नामकरण

- हिन्दी साहित्य के प्रथम चरण को अलग-अलग विद्वानों द्वारा निम्नानुसार अलग-अलग नामों से पुकारा गया है –

क्र. सं.	विद्वान का नाम	नामकरण
1	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	आदिकाल
2	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	वीरगाथा काल
3	महावीर प्रसाद द्विवेदी	बीज वपन काल
4	राहुल सांकृत्यायन	सिद्ध-सामंत काल
5	डॉ. रामकुमार वर्मा	संधि-चारण काल
6	जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन	चारण काल
7	मिश्रबन्धु	आरम्भिक काल
8	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त	प्रारम्भिक काल/शून्य काल
9	डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'	जय काव्य काल/बाल्यावस्था
10	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद	वीरकाल
11	बाबू श्यामसुंदर दास	वीरकाल/अपभ्रंश काल

12	चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'	अपभ्रंश काल
13	धीरेंद्र वर्मा	अपभ्रंश काल
14	डॉ. बच्चन सिंह	अपभ्रंश काल: जातीय साहित्य का उदय
15	डॉ. हरीश	उत्तर-अपभ्रंश काल
16	राम खिलावन पांडेय	संक्रमण काल
17	हरिशचंद्र वर्मा	संक्रमण काल
18	राम प्रसाद मिश्र	संक्रांति काल
19	मोहन अवस्थी	आधार काल
20	शैलेश जैदी	आविर्भाव काल
21	डॉ. पृथ्वीनाथ कमल 'कुलश्रेष्ठ'	अंधकार काल
22	डॉ. शंभुनाथ सिंह	प्राचीन काल

आदिकाल की प्रमुख शैलियाँ:-

- आदिकालीन साहित्य में प्रमुखत: निम्न दो प्रकार की शैलियों का प्रयोग हुआ है –
  1. **डिंगल शैली**
  2. **पिंगल शैली**

1. डिंगल शैली

a. राजस्थानी मिश्रित अपभ्रंश को डिंगल शैली कहा जाता है।

b. इस शैली में कठोर एवं कर्कश शब्दावली का अधिक प्रयोग किया जाता है।

2. पिंगल शैली

a. ब्रज मिश्रित अपभ्रंश भाषा को पिंगल शैली कहा जाता है।

b. इस शैली में कोमल एवं कान्त पदावली का अधिक प्रयोग किया जाता है।

आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ:-

- आदिकालीन साहित्य में प्रमुखत: तीन प्रकार की प्रवृत्तियों का प्रयोग हुआ है –
  1. **वीर गाथात्मकता** – रासो साहित्य की रचनाओं में।
  2. **धार्मिकता** – रास, सिद्ध एवं नाथ साहित्य की रचनाओं में।
  3. **श्रृंगारिकता** – विद्यापति की "पदावली" रचना में।

हिन्दी साहित्य का आदिकवि/सर्वप्रथम कवि

1. **ठाकुर शिव सिंह सेंगर के अनुसार** – पुष्य या पुण्ड
2. **डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार** – स्वयं भू (693 ई. – 750 ई.)
3. **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार** – अब्दुल रहमान (13वीं शताब्दी)
4. **डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार** – शालिभद्र सुरि (1784 ई.)
5. **चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के अनुसार** – राजा मुंज (993 ई.)
6. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार** – राजा मुंज (प्रथम कवि) / चंदबरदाई (प्रथम महाकवि)

7. **डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार** – विद्यापति
8. **राहुल सांकृत्यायन के अनुसार** – सरहपा (सरहपाद) (769 ई.)

- **सर्वमान्यता अनुसार** – सरहपा (सरहपाद)
- **मिश्रबंधुओं के अनुसार** – प्रथम कवि: चंदबरदाई
- **भागीरथ मिश्र के अनुसार** – गोरखनाथ (10-11वीं शताब्दी)

हिन्दी साहित्य की सर्वप्रथम रचना

- **रचनाकार** – श्रावकाचार
- **लेखक** – आचार्य देव सेन
- **रचनाकाल** – 933 ई.
- **विषयवस्तु** – इस रचना में कुल 250 दोहे प्राप्त होते हैं जिनमें श्रावक (जैन) धर्म के सिद्धांतों का वर्णन किया गया है।

आदिकालीन साहित्य का विभाजन

- आदिकाल में लिखे गए समस्त हिन्दी साहित्य को निम्नानुसार चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है –
    1. **रासो साहित्य या चारण साहित्य**
    2. **रास साहित्य या जैन साहित्य**
    3. **सिद्ध साहित्य या बौद्ध साहित्य**
    4. **नाथ साहित्य**
- **नोट:**
    1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इनमें से केवल रासो साहित्य को ही आदिकालीन साहित्य के रूप में स्वीकार करते हैं। शेष तीनों साहित्य को उन्होंने **"सांप्रदायिक शिक्षा मात्र"** कहकर पुकारा है।
    2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन चारों को ही आदिकालीन साहित्य के रूप में स्वीकार किया है।
    3. आदिकाल में ही कुछ रचनाएँ ऐसी भी प्राप्त होती हैं जिन्हें उपर्युक्त चारों में स्थान नहीं दिया जा सकता। ऐसे साहित्य को –
        - ✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने "आदिकालीन फुटकल साहित्य" कहा।
        - ✓ **डॉ. नागेन्द्र** ने "आदिकालीन स्वतंत्र साहित्य" कहा।

1. रासो साहित्य/चारण साहित्य

- **रासो शब्द की व्युत्पत्ति:-** रासो शब्द की रचना के संदर्भ में अलग-अलग विद्वानों द्वारा निम्नानुसार अलग-अलग मत प्रतिपादित किए गए हैं –
    1. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने **"बीसलदेव रासो"** रचना में **"रसायण"** शब्द के आधार पर **रासो शब्द की व्युत्पत्ति "रसायन" शब्द से ही मानी** है।
    2. **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने **अब्दुल रहमान** द्वारा रचित **"संदेश रासक"** रचना के आधार पर **रासो शब्द की व्युत्पत्ति "रासक" शब्द से मानी** है। उन्होंने इसे निम्नलिखित क्रम में विकसित माना – **'रासक - रासअ - रासा - रासो'**
    3. **गार्सा द तासी** ने अपनी रचना में **"पृथ्वीराज रासो"** रचना के लिए **"पृथ्वीराज राजसू"** शब्द का प्रयोग किया है। इस आधार पर उन्होंने **रासो शब्द की उत्पत्ति "राजसू" या "राजसूय" शब्द से मानी** है।
    4. **कविराज श्यामल दास एवं काशीप्रसाद जायसवाल** ने **रासो शब्द की रचना "रहस्य" शब्द से मानी** है।
    5. **पं. हरप्रसाद शास्त्री एवं श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाठक** ने **इस शब्द की उत्पत्ति "राजयश" शब्द से मानी** है।
    6. **डॉ. दशरथ शर्मा एवं नागरी प्रचारिणी सभा, काशी** ने **रासो शब्द की उत्पत्ति "रास" शब्द से मानी** है।

- **सर्वमान्य मत:- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत सर्वाधिक मान्य है।**
- **रासो साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ:**
  - ✓ यह साहित्य **चारण कवियों द्वारा अपने आश्रय दाताओं की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा में लिखा गया** है।
  - ✓ इस साहित्य की रचनाओं में **तत्कालीन सामंती जीवन की संपूर्ण झलक देखने को मिलती है।**
  - ✓ इस साहित्य की रचनाओं में **ऐतिहासिकता एवं कल्पना का सुंदर समन्वय किया गया है।**
  - ✓ **रासो (चरित काव्य या कथा काव्य) काव्य की परंपरा** को दर्शाता है।
  - ✓ इन रचनाओं में **युद्धों एवं प्रेम कथाओं का अधिक वर्णन** किया गया है।
  - ✓ **छंदों की विविधता** पाई जाती है।
  - ✓ इन रचनाओं में **वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता देखने को मिलती है।**
  - ✓ **सिद्ध, जैन एवं नाथ संप्रदाय** द्वारा **धार्मिक काव्य की रचना** की गई है।
  - ✓ **इस साहित्य की अधिकांश रचनाएँ संदिग्ध या अप्रमाणिक मानी जाती हैं।**
  - ✓ **यह साहित्य चारण कवियों की संकुचित राष्ट्रीयता का प्रतीक भी माना जाता है।**
  - ✓ **इसमें अपभ्रंश-प्रभावित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है।**
  - ✓ **लोक साहित्य की रचना में डिंगल एवं पिंगल भाषा का भी प्रयोग किया गया है।**
- **रासो साहित्य की प्रमुख रचनाएँ:**

क्र. सं.	**रचना का नाम**	**रचनाकार**
1	पृथ्वीराज रासो	चन्द्रबरदाई
2	बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
3	परमाल रासो	जगनिक
4	खुमाण रासो	दलपति विजय
5	हम्मीर रासो	शार्ङ्गधर
6	विजयपाल रासो	नल्लसिंह भाट
7	बुद्धिरासो	जल्हण (चन्द्रबरदाई के पुत्र)

1. पृथ्वीराज रासो

- **लेखक** – चन्दबरदाई
- **रचनाकाल** – 1168 ई. (1225 वि.)
- **काव्य स्वरूप** – श्रव्य, पद्य, प्रबंधात्मक, महाकाव्य
- **नोट:-** आचार्य **रामचन्द्र शुक्ल** ने **"पृथ्वीराज रासो"** को **हिन्दी का सर्वप्रथम महाकाव्य** एवं **चन्दबरदाई को हिन्दी का सर्वप्रथम महाकवि** माना है।
- **रामकुमार वर्मा** ने इसकी शैली **पिंगल** मानी है, जबकि अन्य इसे **डिंगल** मानते हैं।
- **कुल छंद या पद:**
  - ✓ **16306** छंद
  - ✓ **छंद विधान:** इन 16306 पदों की रचना के लिए कुल **68 प्रकार के छंदों** का प्रयोग किया गया है, जिनमें **"छप्पय छंद"** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है।
  - ✓ इसी कारण **छप्पय छंद को चन्दबरदाई का सर्वाधिक प्रिय छंद** भी माना जाता है।
- **विभाजन:-** इस रचना का विभाजन **69 समयों** में किया गया है।

- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - ✓ **इस रचना में** अजमेर के राजा **पृथ्वीराज चौहान** एवं कन्नौज के राजा **जयचंद की पुत्री संयोगिता** के प्रेम विवाह एवं **पृथ्वीराज चौहान द्वारा लड़े गए युद्धों** का वर्णन किया गया है।
  - ✓ **इस रचना की सर्वप्रथम जानकारी कर्नल टॉड** द्वारा स्वरचित **"एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** में दी गई थी।
  - ✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. नागेन्द्र एवं पं. हरप्रसाद शास्त्री** के अनुसार, इस रचना का **उत्तरार्द्ध भाग चन्दबरदाई के पुत्र जल्हण** द्वारा लिखा गया माना जाता है।

    "पुस्तक जल्हण हत्थ दै, चलि गज्जन कृपकाज"
  - ✓ **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने इस रचना को **अर्ध प्रमाणिक मानते हुए** इसे केवल **"शुक-शुकी संवाद"** कहा है।
  - ✓ **डॉ. नागेन्द्र** ने इस रचना को **"घटनाकोश" मात्र** कहा है।
  - ✓ **बाबू श्याम सुंदर दास एवं उदयनारायण तिवारी** ने इसे **"विशाल वीर काव्य"** कहा है।

    सूत्र: "श्याम का उदय विशाल वीर रूप में हुआ है।"
  - ✓ **डॉ. बच्चन सिंह** ने इसे **"राजनीति की महाकाव्यात्मक त्रासदी"** कहा है।
- **रचना की प्रमाणिकता के संदर्भ में तीन मत:**
  1. **अप्रमाणिक**
  2. **अर्ध प्रमाणिक**
  3. **प्रमाणिक**

1. अप्रमाणिक मानने वाले विद्वान:
- ✓ **डॉ. वूलर** – 1875 ई. में इस रचना को सर्वप्रथम **अप्रमाणिक घोषित** किया था।
- ✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** – उन्होंने इसे **पूरा ग्रंथ जारी** माना।
- ✓ **कविराज मुरारीदान एवं श्यामलदास**
- ✓ **गौरीशंकर हीरानंद ओझा**
- ✓ **मुंशी देवी प्रसाद**

  (स्मरणीय ट्रिक: "राम, श्याम, मुरारी, शंकर, देवी" – अशुक्ल श्याम मुरारी गौरी देवी)

2. अर्ध प्रमाणिक मानने वाले विद्वान:
- ✓ **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी**
- ✓ **मुनि जिन विजय**
- ✓ **सुनीति कुमार चटर्जी**
- ✓ **अगरचन्द नाहटा**

3. प्रमाणिक मानने वाले विद्वान:
- ✓ **कर्नल टॉड**
- ✓ **मिश्रबन्धु**
- ✓ **बाबू श्यामसुंदर दास**
- ✓ **मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या**
- ✓ **मथुरा प्रसाद दीक्षित**
- ✓ **डॉ. दशरथ शर्मा**
- ✓ **अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'**

- **"कामायनी" के 15 सर्ग**

  1. **चिंता**
  2. **आशा**
  3. **श्रद्धा**
  4. **काम**
  5. **वासना**
  6. **लज्जा**
  7. **कर्म**
  8. **ईर्ष्या**
  9. **इड़ा**
  10. **स्वप्न**
  11. **संघर्ष**
  12. **निर्वेद**
  13. **दर्शन**
  14. **रहस्य**
  15. **आनंद**

- **ट्रिक:**

  "बिना चिंता के आशा ने, श्रद्धा से किया काम, वासना को आई लज्जा, कर्म को हुई ईर्ष्या, इड़ा को आया स्वप्न, संघर्ष और निर्वेद का, दर्शन को रहस्य में आया आनंद।"

- **पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ (ट्रिक – "खब्रबुक ह")**
  - ✓ पश्चिमी हिन्दी में ब्रज **हरि के कन्ने खड़ी कौरवी बुंदेली**

    1. **ब्रजभाषा**
    2. **हरियाणवी**
    3. **कन्नौजी**
    4. **खड़ी बोली**
    5. **बुंदेली**

- **पूर्वी हिंदी (ट्रिक – "पूर्वी 36 वध कर बघेली 'अवध'")**
  1. **छत्तीसगढ़ी**
  2. **अवधी (कोसली पूर्वी)**
  3. **बघेली**

- **बिहारी भाषा समूह (ट्रिक – "मग में मेथी भोज करे")**
  1. **मगही**
  2. **मैथिली**
  3. **भोजपुरी**

- **राजस्थानी भाषा समूह (ट्रिक – "मामे ने जय को मारा")**
  1. **मालवी (द.रा.)**
  2. **मेवाती (उ.रा.)**
  3. **जयपुरी (पूर्वी.रा.)**
  4. **मारवाड़ी (प.रा.)**

- **अर्ध प्रमाणिक मानने वाले विद्वान:**
  - ✓ **हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने **"परमाल रासो"** को भी **अर्ध प्रमाणिक** माना है।
  - ✓ **ट्रिक: "हजार मुनि मुनि अगर अर्ध प्रमाणिक हैं।"**
    1. **हजारी प्रसाद द्विवेदी**
    2. **मुनि जिन विजय**
    3. **सुनीति कुमार चटर्जी**
    4. **अगरचंद नाहटा**